INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY ADVANCED RESEARCH TRENDS
ISSN : 2349-7408
VOLUME IV ISSUE 2(4), DECEMBER, 2017

समस्या – नाटककार लक्ष्मीनारायण मिश्र

डॉ.के. नागेश्वर राव
सह आचार्य, हिन्दी विभाग, श्री वाई.एन. महाविद्यालय (स्वायत्त),
नरसापुर-534275, प.गो.जिल्ला

समस्या-नाटकों के पुरस्कर्ता के रूप में श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र जी का हिन्दी नाटक-साहित्य में विशिष्ट प्रदेय है। मिश्रजी ने पूर्व-प्रचलित नाट्य-शैली को त्यागकर हिन्दी नाटक को यथार्थवादी मंच से जोड दिया। उनके समस्या-नाटकों में जीवन के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण का अभिव्यक्तीकरण अद्भुत ढंग से हुआ है। इन नाटकों में प्रतिपादित समस्याएँ भारतीय समाज के परिवर्तित परिवेशगत यथार्थ की उपज हैं जिनका समाधान मात्र सामाजिक संभावनाओं में नहीं, भारतीय आदर्श में खोजा गया है। मिश्र जी के समस्या-नाटक संख्या में उनके अन्य प्रकार के नाटकों से कम हैं, किन्तु मिश्रजी की ख्याति एवं कीर्ति के विशाल भवन के नींव में ये समस्या-नाटक ही हैं।

हिन्दी साहिय के प्रतिभावान रचनाकार लक्ष्मीनारायणमिश्र ने काव्य, नाटक, एकांकी, अनुवाद आदि साहित्यिक विधाओं पर अपने सर्जक व्यक्तित्व की छाप छोड दी। अनुभव की प्रामाणिकता, अनुभूति की सच्चाई और यथार्थ के प्रबल आग्रह के कारण मिश्र जी की रचनाओं ने हिन्दी साहित्य के विकास को एक नई गति प्रदान की है। बुद्धिवादिता की दृष्टि से नाटककार मिश्रजी की रचना-दृष्टि और उनकी मौलिक चिन्तन-पद्धति उनकी रचना-साधना के कई महत्वपूर्ण संदर्भों में स्पष्टतः अभिव्यंजित होती है। एक सृजनात्मक कलाकार के रूप में अपने सामयिक साहित्य की व्याख्या तथा आरोप-प्रत्यारोप करने में आलोच्य रचनाकार की व्यावहाकिक एवं सैद्धांतिक समीक्षा-पद्धति की अभिव्यक्ति के अनेक अवसर संप्राप्त हुये हैं। साहित्य रचना की पद्धति, स्वरूप, भूमिका और लेखकीय स्वतंत्रता के संबंध में मिश्रजी की मान्यताएँ अत्यंत मौलिक दृष्टिगत होती हैं। सामाजिक जीवन के साधारण संदर्भों में से नवीन एवं प्रगतिशील विचारों की अनुगूँज पैदा कर सकने की सामर्थ्य को वे अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं तथा उसे सामाजिक यथार्थ की भूमि तक ले जाना अपेक्षित समझते हैं। प्रसादोत्तर युगीन हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में युग प्रवर्तक

नाटककार, समीक्षक, कवि एवं अनुवादक के रूप में भी मिश्रजी न अत्यंत प्रसिद्धि पायी है। नाटककार ने सामाजिक यथार्थ के आधार पर अपने नाटकों के लिये कथावस्तु का चयन किया है। मिश्र जी निश्चय ही कथ्य को आधार बनाकर कथा का ताना-बाना बुननेवाले नाटककार हैं। मिश्रजी के संपूर्ण समस्या-नाटकों की कथावस्तु का आधार आधुनिक समाज में व्याप्त परंपरागत विकृतियाँ हैं। इन विकृतियों का कारण यह है कि मानव की वैयक्तिक चेतना में मनोवेगात्मक स्वच्छंदता के कारण जहाँ एक ओर प्रेम की उत्पत्ति होती है, वहीं दूसरी ओर समाज का संघर्ष प्रारंभ हो जाता है, आंतरिक इच्छा की प्राप्ति के लिये बंधनों से संघर्ष होने के कारण एक अंतर्द्वन्द्व का जन्म होता है, इस अंतर्द्वन्द्व का कारण है एक ओर प्रेम की रोमानी भावना और दूसरी ओर समाज का यथार्थ। मिश्रजी के समस्या-नाटकों की कथावस्तु का यही मूल स्वर है। सभी समस्या-नाटकों की कथावस्तु "उत्पाद्य" है। "सन्यासी" की मुख्य कथा नारी समस्या पर आधारित हैं। इसमें तीन कथानकों का संयोजन हैं। प्रमुख कथा मालती और विश्वकांत के जीवन के संबंधित है, जिससे अन्य उपकथाएँ संबद्ध कर दी गई हैं। "राक्षस का मंदिर" की कथा में प्रमुख समस्या केवल वेश्या की समस्या न होकर मानव की कुप्रवृत्तियों की समस्या है। प्रमुख कथा रामलाल-अश्करी-मुनीश्वर के त्रिकोण से संबंधित है। "मुक्ति का रहस्य" की कथावस्तु में समस्या प्रेममूलक है। मुख्य कथा उमाशंकर, डॉ. त्रिभुवननाथ और आशादेवी के त्रिकोण से संबद्ध है। अन्य सहयोगी पात्रों के रूप में नाटककार ने अन्य छोटी-मोटी समस्याओं को चित्रित किया है। "राजयोग" के कथानक में निहित समस्या राजकीय न होकर प्रेम की समस्या है, जिसका संबंध सामाजिक लांछन और चिरंतन नारी से है। इस नाटक में एक ही प्रमुख कथानक है जो चंपा-नरेन्द्र और शत्रुसूदन से संबंधित हैं। इसमें अतिरिक्त रूप से किसी उपकथा का समावेश नहीं किया गया है। "सिन्दूर की होली" की कथा चिरंतन नारीत्व की समस्या पर आधारित है, इसके प्रेम का आधार प्रथम दर्शन और प्राकृतिक आकर्षण हैं। नाटककार ने रजनीकांत के माध्यम से नाटक की समस्त कथाओं को संबद्ध कर दिया है। इस नाटक की कथावस्तु में मुख्य और उपकथा का कोई अंतर दृष्टिगत नहीं होता, क्योंकि रिश्वत के माध्यम से संयुक्त उपकथा मुख्य कथा का ही कारण है और इसी आधार पर मुख्य कथा का नियोजन हुआ है। "आधीरात" की कथा की समस्या प्रकृति में पुरुष के आकर्षण की समस्या है। एक नारी वह "माया" है जिसके चारों ओर प्रमुख पात्र घूमते हैं। तीन पुरुष की एक नारी और एक नारी के तीन पुरुष, इस कथानक की संयोजना के कारण हैं। नाटक का

मुख्य कथानक मायावती से संबद्ध है। इस प्रकार हिन्दी में अर्थ गर्भित सामाजिक समस्या-नाटकों की रचना का श्री गणेश हुआ है।

मिश्रजी ने अपने पात्रों के लिये जीवन की यथार्थता के अनुरूप ही नाट्च-संसार निर्मित किया है। सामाजिक यथार्थ के धरातल पर ये पात्र अपना स्वच्छंद विकास करते हैं। इसलिये वे आंतरिक एवं बाह्य, विचार और अनुभूति के सामंजस्य से प्रकट होते हैं। ये पात्र युग-भावना के विराट प्रतिनिधि हैं। मिश्रजी के पात्र सारे मानवीय संबंधो के बीच व्यक्ति की निजी सत्ता को भी आलोकित करते हैं। मिश्रजी के पात्र द्वन्द्व से, पूरी शक्ति से जूझते हैं और थोथी भावुकता से ग्रस्त द्वन्द्व को बहुत कम प्रश्रय देते हैं। विवेच्य पात्र यथार्थमूलक आदर्शवाद की देन है। मानव और मानवीय संबंधों की प्रधानता के कारण आलोच्य नाटक चरित्र-प्रधान होने को बाध्य है। नाटककार अनुभूति और यथार्थता के माध्यम से पात्र के अंतर्जगत को इतना महत्व देते हैं कि कथावस्तु गौण हो जाती है। मिश्रजी के नाटकों में घटनाएँ साधारण हैं, पर पात्र असाधारण हैं। नाटककार ने अपनी सारी शक्तियों को केवल नायक के चित्रण में नहीं लगाया। इन नाटकों में न नायक का चरित्र उतनी ऊँचाइयों को छूता है कि वह सामान्य से विशिष्ट लगे और न सामान्य पात्र इतना साधारण, दीखता है कि उसकी भूमिका नगण्य प्रतीत हो। मिश्रजी के पात्र सद् और असद् के वर्गीय प्रतिनिधि अवश्य हैं, किन्तु वे अपने स्वरूप में मानवीय हैं। मिश्रजी के समस्या-नाटकों में उनकी यथार्थवादी एवं बुद्धिवादी चिन्तन-दृष्टि के अनुरूप युगीन स्थितियाँ व्याख्यायित हुई हैं। व्यक्ति, परिवार और समाज की विभिन्न समस्याओं पर विचार करने के संदर्भ में न केवल यथार्थता को परखने तथा उसे स्पष्ट करने को ही प्राथमिकता दी गई है, बल्कि बुद्धिवादी धरातल पर समस्या के अनेक पहलुओं पर विचार-विमर्श करने की ओर ध्यान दिया गया है। मिश्रजी के नाटकों में युगीन स्थितियों की जटिलता का अंकन करने के संदर्भ में व्यक्त किये गये विचारों में भारतीय एवं पाश्चात्य चिन्तन-धारा के समन्वय को देखा जा सकता है। प्रेम और विवाह की समस्या नारी जीवन की समस्या, परिवारिक व सामाजिक जीवन की समस्या को यथार्थ, बुद्धि व तर्क के सहारे पहचानने की कोशिश की गयी और युगीन विसंगतियों के रूप में आधुनिक जीवन में परिव्याप्त मूल्यहीनता को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। कहीं-कहीं समस्या के सैद्धांतिक पक्ष पर विचार किया गया और बुद्धिवादी चिन्तन के आग्रह के कारण तथा प्रतिनिधि चरित्रों की विचारधारा के संप्रेषण के माध्यम बन जाने के कारण विवेच्य नाटकों के संवाद तत्युगीन समाज के यथार्थ जीवन की उलझनभरी

समस्याओं को लेकर नाटक का सृजन कर मिश्रजी ने हिन्दी नाटकों में एक नवीन विचार-पद्धति को जन्म दिया है। मिश्रजी के नाटकों के विषयगत एवं संवेदनपक्ष के समान उनका नाट्य शिल्पात्मक परिप्रेक्ष्य भी अत्यंत समृद्ध है। नाटककार के लिये शिल्प कथ्य को उजागर करने का एक मात्र उपकरण रहा है। नाट्यात्मक शिल्प नाटककार के लिये सदैव साधन रहा है। इसलिये विवेच्य नाटकों में शिल्प के स्तर पर विभिन्न प्रकार के प्रयोग मिलते हैं। लक्ष्मीनारायम मिश्र के नाटक रंगमंच की जागरूक अनुभूति और अनुभव के द्योतक हैं। उनका कथ्य रंगतत्व से ओतप्रोत है। नाटककार ने वर्तमान को नये रंग प्रयोगों के द्वारा अपने नाट्य लेखन में दर्शकों के सम्मुख रखा है। लक्ष्मीनारायण मिश्र प्रयोगशील और रंगकर्मी रचनाकार भी हैं। उनकी रंगानुभूति बाहर से थोपी हुई कोई इतर प्रेरणा न होकर उनके हृदय से स्वतः उठती हुई एक भीतरी शक्ति है, जिसके माध्यम से वे समर्थ नाटककार होने की पहचान देते हैं।

सहायक ग्रंथ (Reference) :

1. आधुनिक हिन्दी नाटक - डॉ. नगेंद्र - लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद - 1987
2. आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - वाणी प्रकाशन दिल्ली - 1999
3. नाट्य समीक्षा - डॉ. दशरथ ओझा - नेषनल पब्लिषिंग हाऊस - दिल्ली - 1989
4. लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटक - डॉ.रामाश्रय रत्नेश - तक्षशिला प्रकाशन - कानपूर - 1987
5. समकालीन हिन्दी नाटक - डॉ. दशरथ ओझा - नेषनल पब्लिषिंग हाऊस - दिल्ली - 1989
6. हिन्दी नाटक और लक्ष्मीनारायण मिश्र - डॉ.बब्बन त्रिपाठी - लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद - 1989
7. हिन्दी के समस्या नाटक - डॉ. विनय कुमार - वाणी प्रकाशन दिल्ली - 1999
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल - राजकमल प्रकाशन - दिल्ली - 2001
9. हिन्दी नट्य समालोचना - डॉ. मांधाता ओझा - वाणी प्रकाशन दिल्ली - 1998

10. हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास - डॉ. सोमनाथ गुप्त - लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद - 1999
11. हिन्दी नाटक उद्‌भव एवम विकास - डॉ. दशरथ ओझा - राजकमल प्रकाशन - दिल्ली - 1999

पत्र पत्रिकाएँ -

1. आजकल - मार्च - 2006
2. आलोचना - सितंबर - 2002
3. नईधारा - दिसंबर - 2000
4. साहित्य संदेश - अप्रेल - 1999
5. केरल भारती - फरवरी - 2008